शक्तिपीठों का अंतर्निहित ज्ञान और विज्ञान

डॉ कपिल देव

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग,

जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू

Email : Kapilshastri.ju@gmail.com

सारांश

शक्ति पीठ हिंदू परंपरा में देवी-केंद्रित आदि शक्ति, शक्तिवाद में महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल हैं। कुछ पुराणों के अनुसार, विशेष रूप से श्रीमद देवी भागवतम, विभिन्न खातों द्वारा 51, 64 और 108 शक्तिपीठ हैं, जिनमें से 18 को मध्यकालीन हिंदू ग्रंथों में अष्टदशा महा (प्रमुख) के रूप में नामित किया गया है। यह पत्र भारत के शक्तिपीठों के साथ सूर्य की विद्युत चुम्बकीय चमक के संबंध की व्याख्या करता है

संकेत शब्द :- शक्तिपीठ, अंतर्निहित ज्ञान, विज्ञान

भूमिका

शक्ति एक देवनागरी शब्द है जिसका अर्थ है "ऊर्जा," "शक्ति," "प्रयास," "शक्ति," और "क्षमताएं।" माना जाता है कि आदिम ब्रह्मांडीय ऊर्जा उन गतिशील शक्तियों को प्रतिबिंबित करती है जो पूरे ब्रह्मांड में घूमती हैं। हिंदू धर्म, विशेष रूप से शक्तिवाद, एक बहुत पुरानी और महत्वपूर्ण हिंदू परंपरा है। शक्ति, जिसे हिंदू धर्म में "द ग्रेट डिवाइन मदर" के रूप में भी जाना जाता है, उस ऊर्जा की पहचान है जो रचनात्मक और विनाशकारी दोनों है। उसे "आदि शक्ति" या "आदि पराशक्ति" के रूप में जाना जाता है, अर्थात सभी प्रकार के पदार्थ, तापीय ऊर्जा, संभावित ऊर्जा, गुरुत्वाकर्षण ऊर्जा, और सृष्टि के सभी स्तरों पर जीवन ऊर्जा में प्रकट होने वाली मौलिक ऊर्जा। इन सभी को "परा शक्ति" की अंतहीन अभिव्यक्ति माना जाता है। उसका असली रूप अब सर्वविदित है, क्योंकि वह कई तरह से प्रकट हो सकती है। "प्राण-शक्ति," जिसे "ऑक्सीजन" या "एन्हांस्ड ऑक्सीजन" के रूप में भी जाना जाता है, हिमालय के उत्तर-पूर्व दिशा में तेजी से चमकने वाली विशाल बिजली द्वारा बनाई गई है। केवल एक पुरुष और एक महिला ही जन्म देने में सक्षम हैं। तो, प्रकृति में, बिजली का एक सकारात्मक स्ट्रीमर ऊपर की ओर बहता है, जबकि एक नकारात्मक स्ट्रीमर नीचे की ओर बढ़ता है, जिसे वैज्ञानिकों ने सकारात्मक और नकारात्मक "ओमेगा" के रूप में इंगित किया है, जो "प्राण-शक्ति" या "तरल ऑक्सीजन" को 183 डिग्री सेल्सियस पर युग्मित करते समय उत्पन्न करता है। माँ प्रकृति के विविध डीएनए के साथ। चूंकि सौर मंडल के ग्रह विभिन्न तत्वों को टेलीपैथिक या मेमोरी कंटेनर "मैग्नेटाइट" तत्वों के रूप में फॉस्फोरस, तांबे और अन्य तत्वों के रूप में निष्कासित करते हैं, दुनिया भर से वैज्ञानिक रिपोर्टों के अनुसार, ब्रह्मांड की एस्ट्रो जैविक घटना के रूप में जाना जाता है, डीएनए बाध्यकारी के लिए प्रकृति में एमिनो एसिड बनाता है जरूरत पड़ने पर अलग-अलग तापमान और दबाव पर विशिष्ट प्रोटीन उत्पादन के लिए। जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न "जीवों" के नैनो बीज हिमालय क्षेत्र में ऑक्सीजन के उलझाव में तरल और ठोस ग्रेपल के साथ भोर में पहुंचते हैं, अंततः गंगा के पानी, विशेष रूप से अलकनंदा के साथ मिल जाते हैं, जो मां गंगा की 5-7 सहायक नदियों में प्रमुख सहायक नदी है। गंगा के चित्रों को सभी प्राचीन संस्कृत साहित्य, पुराणों, प्रतिमाओं और पत्थर की मूर्तियों जैसे महाबलीपुरम और एलोरा कैलाश मंदिर की गुफाओं के दक्षिण भारतीय मंदिर में जीवनदायिनी के रूप में दिखाया गया है। हाल ही में वैज्ञानिकों ने गंगा के पानी में अलग डीएनए की खोज की। यही कारण है कि ऑस्ट्रेलिया में एडिलेड के प्रमुख विश्वविद्यालय ने डीएनए या मानवशास्त्रीय अध्ययनों के आधार पर एक नक्शा जारी किया जो दर्शाता है कि पृथ्वी पर जीवन हिमालय के गगनेटिक क्षेत्र में शुरू हुआ था। वैश्विक विद्युत धाराओं में घूमना या बिखरना डीएनए नैनो बीज या "जीवास" के स्थानांतरित बीज हैं। "मा धारी देवी शक्ति पीठ" एक हिंदू मंदिर है जो मां धारी देवी को समर्पित है। शक्ति पीठ पृथ्वी चुंबकीय पोर्टल चुंबकीय पोर्टल या गेट का एक उच्च-ऊर्जा चुंबकीय ग्रिड है, जो ग्रह पर एक विशेष स्थान है जो ऊर्जा के घूमने वाले केंद्र के रूप में काम करता है, जिसमें किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में अधिक पृथ्वी ऊर्जा होती है। पृथ्वी का विद्युतचुंबकीय क्षेत्र एनर के प्राकृतिक या मौलिक निर्माण के इस बिंदु पर शुरू होता है। दुनिया भर में ऊर्जा के भंवर देखे

जा सकते हैं। ये ऊर्जा भंवर, जैसे "धारी देवी", यूनाइटेड किंगडम में स्टोनहेंज के समान प्राचीन या पवित्र स्मारक हैं। भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका, अफगानिस्तान और नेपाल में 51 या 52 या 108 शक्ति पीठ प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध हैं, जब दक्षिण पूर्व एशिया में कोई राजनीतिक विभाजन नहीं था और हिंदू धर्म या शक्तिवाद भारत का सबसे पारंपरिक था। वैज्ञानिक धर्म। उच्च पवित्रता के ये स्थान पृथ्वी के चुंबकीय द्वार के रूप में कार्य करते हैं। कई साइटों पर वैज्ञानिक जांच की जरूरत है। धारी देवी शक्ति पीठ ने केदारखंड के हिमालयी क्षेत्र में आपदा का चित्रण किया था। विद्युत आवेश जो कुछ ठोस पदार्थों जैसे कि क्वार्ट्ज क्रिस्टल, कुछ सिरेमिक, और जैविक पदार्थ जैसे हड्डी, डीएनए और कुछ प्रोटीनों में लागू यांत्रिक तनाव की प्रतिक्रिया में बनता है, विद्युत डब के रूप में जाना जाता है, एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग किया जा सकता है तरीकों की विविधता। दाब और गुप्त ऊष्मा से उत्पन्न विद्युत को पीजोइलेक्ट्रिसिटी के रूप में जाना जाता है। "पाई ज़ियान" का अर्थ है "इलेक्ट्रॉन या एम्बर को निचोड़ना या मुद्रा करना", ग्रीक और सभी प्राचीन संस्कृति में विद्युत आवेश का एक प्रारंभिक या प्राचीन स्रोत। क्रिस्टलीय सामग्री में यांत्रिक और विद्युत तनाव के बीच रैखिक विद्युतीय संबंध पीजोइलेक्ट्रिकिटी प्रभाव का कारण बनता है। पीजोइलेक्ट्रिक प्रभाव, जो एक लागू विद्युत क्षेत्र के परिणामस्वरूप यांत्रिक तनाव का आंतरिक निर्माण है। पीजोइलेक्ट्रिकिटी का उपयोग विभिन्न प्रकार के अनुप्रयोगों में किया जाता है, जिसमें ध्वनि उत्पादन और पहचान, हाईवोल्टेज पीढ़ी, और अल्ट्रासोनिक नोजल को चलाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक आवृत्ति पीढ़ी शामिल है। इसके अलावा, क्वार्ट्ज जैसे कुछ सामग्रियों में प्रत्यक्ष पीजोइलेक्ट्रिकिटी के माध्यम से 1000 वोल्ट के संभावित अंतर उत्पन्न किए जा सकते हैं। इलेक्ट्रिक सिगरेट लाइटर सबसे प्रसिद्ध अनुप्रयोग है; बटन दबाने से स्प्रिंग-लोडेड हैमर पीजोइलेक्ट्रिकिटी क्रिस्टल पर प्रहार करता है, जिससे एक उच्च-वोल्टेज विद्युत प्रवाह उत्पन्न होता है जो एक छोटे से स्पार्क गैप से चलता है, गैस को गर्म और प्रकाश करता है। एक सामान्य ट्रांसफार्मर के विपरीत जो इनपुट और आउटपुट के बीच चुंबकीय युग्मन का उपयोग करता है, एक पीजोइलेक्ट्रिकिटी क्वार्ट्ज ब्लॉक एसी वोल्टेज गुणक के रूप में कार्य करता है। अधिकांश चिकित्सा अल्ट्रासाउंड ट्रांसड्यूसर में पीजोइलेक्ट्रिकिटी का उपयोग किया जाता है। शक्तिशाली बिजली को एक क्वार्ट्ज ब्लॉक के माध्यम से प्रसारित किया जा सकता है जो उच्च-शक्ति सुपरसोनिक ध्वनि उत्पन्न करता है। हालाँकि, भारत में बादल बनने और चक्रवात बनने की गतिकी का संबंध शक्ति पीठों से है। दिन के दौरान, इसकी विद्युत चुम्बकीय तरंगें सूर्य के विद्युत चुम्बकीय फ्लेयर्स से कई बार जुड़ती हैं जो आकाश के परिवेश को आयनित करती हैं। परिणामस्वरूप बादल बनना, चक्रवात का विकास, एक वायुमंडलीय नदी निर्माण सभी आज्ञाकारी हैं। अधिकांश चिकित्सा अल्ट्रासाउंड ट्रांसड्यूसर में पीजोइलेक्ट्रिकिटी का उपयोग किया जाता है। शक्तिशाली बिजली को एक क्वार्ट्ज ब्लॉक के माध्यम से प्रसारित किया जा सकता है जो उच्च शक्ति सुपरसोनिक ध्वनि उत्पन्न करता है।

भारत के शक्ति पीठों के साथ सूर्य के विद्युत चुम्बकीय चमक का संबंध :

इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फ्लेयर, जो ज्यादातर उत्तरपूर्वी हिस्सों में पाया जाता है, प्रभाव छोड़ने के साथ संपर्क करता है, शक्तिपीठ लहरें चक्रवात बनाने के लिए। अधिकांश चक्रवात ओडिशा, पश्चिम बंगाल के तटीय जिलों की ओर उत्पन्न होते हैं और असम, पूर्वोत्तर सात राज्यों और हिमालयी क्षेत्रों की ओर बढ़ते हैं। पूर्व दिशा में भारत के तटीय क्षेत्रों के साथ शक्ति पीठों के रूप में इसकी उत्पत्ति बिंदु से अलग-अलग चैनल हैं, पूर्वोत्तर और दक्षिण पूर्व में कम दबाव क्षेत्र बनाते हैं जो बड़े पैमाने पर बादलों और भारी बारिश को आकर्षित करता है। सूर्य की शक्तिशाली विद्युतचुंबकीय ज्वालाएं शक्ति पीठों के विद्युत चुम्बकीय तरंगों को आकर्षित करती हैं, बादल को आयनित करती हैं, जिससे गरज के प्रभाव की शुरुआत होती है।

ओडिशा और पश्चिम बंगाल के शक्ति पीठ सूर्य की गर्मी के कारण निम्न दबाव का क्षेत्र बनाते हैं, जिसका व्यापक प्रभाव नदी और समुद्र के पानी पर भी पड़ता है। ओडिशा में देवी तरनतारिणी से गुवाहाटी, असम में कामाख्या तक, चक्रवात उत्पन्न हुआ और भारत के सभी उत्तर-पूर्वी शक्ति पीठों के मार्ग का अनुसरण करना शुरू कर दिया। यही कारण है कि चेरापूंजी (मौसिनराम) विश्व में सर्वाधिक वर्षा वाला क्षेत्र है। सूरज की भारी लपटें। हालांकि इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फ्लेयर्स एक सतत प्रक्रिया है लेकिन सूर्य की कोर से उत्पन्न तूफान की तरह पृथ्वी पर चक्रवात पैदा करते हैं। लेकिन यह हर दिन की सामान्य घटना है, जब कम शक्ति वाले सूर्य से विद्युत चुम्बकीय चमक निकलती है और अधिसूचित शक्ति पीठों के विद्युत चुम्बकीय तरंगों के साथ मिश्रण करने का प्रयास करती है, जो समय की शुरुआत से भारत में बिजलीघर रही है।

अब तक हमने अंतरिक्ष और ऊपरी वायुमंडल के वातावरण की चर्चा इस प्रकार की है जैसे कि यह विद्युत रूप से तटस्थ हो। वास्तव में, यह नहीं है, और इसे प्लाज्मा के रूप में पहचाना जाना चाहिए, यानी, एक गर्म, भारी आयनीकृत माध्यम जिसे अक्सर ठोस, तरल पदार्थ और गैसों के बाद "पदार्थ की चौथी अवस्था" के रूप में जाना जाता है। ब्रह्मांड द्रव्यमान से 99% अधिक प्लाज्मा है; "साधारण" मामला दुर्लभ अपवाद है। प्लाज्मा जब भी गैस को अलग करने और आयनित करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा होती है और इसे ठंडा करने और तटस्थ अवस्था में पुनर्संयोजन से रखने के लिए होती है। रेडियोनिक्स, कई अन्य वैज्ञानिक उपकरणों की तरह, पूरे भारत में शक्ति पीठों में ऐसे विद्युत चुम्बकीय तरंगों के अस्तित्व का पता लगा सकता है। छोटे उपग्रह जिनका उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, जिसमें ऐसी विद्युत चुम्बकीय तरंगों का पता लगाना शामिल है।

मैक्स कार्ल अर्नस्ट लुडविग प्लैंक (मैक्स प्लैंक) ने 1918 में भौतिकी में नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया, उन्होंने अपनी ऊर्जा 'क्वांटा' की खोज के द्वारा भौतिकी की उन्नति के लिए प्रदान की गई सेवाओं की मान्यता में। प्लैंक ने भौतिकी में कई योगदान दिए लेकिन उन्हें मुख्य रूप से क्वांटम सिद्धांत के प्रवर्तक के रूप में उनकी भूमिका के लिए याद किया जाता है। उनके दिव्य विश्वास के बारे में, हम यहां सभी को यह याद दिलाने के लिए पूरी लंबाई शामिल कर रहे हैं कि वे वैज्ञानिक हैं या प्रोफेसर या उनके जीवन को सफल बनाने के लिए और कुछ भी। वे कहते हैं, "हमारे अपने जीवन के संचालन में कारण सिद्धांत बहुत कम मदद करता है, क्योंकि तार्किक स्थिरता के लौह कानून द्वारा हमें अपने भविष्य की कारण नींव रखने या उस भविष्य की भविष्यवाणी करने से बाहर रखा जाता है जो निश्चित रूप से वर्तमान से उत्पन्न होता है। लेकिन मानव जाति को रोज़मर्रा के अस्तित्व के संचालन के लिए मूलभूत सिद्धांतों की आवश्यकता है, और यह आवश्यकता वैज्ञानिक ज्ञान की भूख से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। एक व्यक्ति के लिए अक्सर एक ही कार्य दुनिया के सभी ज्ञान की तुलना में कहीं अधिक महत्व रखता है। और इसलिए, केवल बौद्धिक उपकरण की तुलना में मार्गदर्शन का एक और स्रोत होना चाहिए। कार्य-कारण का नियम विज्ञान का मार्गदर्शक नियम है; लेकिन स्पष्ट अनिवार्य-अर्थात, कर्तव्य का आदेश-जीवन का मार्गदर्शक नियम है। यहाँ बुद्धि है चरित्र को स्थान देने के लिए, और धार्मिक विश्वास को वैज्ञानिक ज्ञान देने के लिए। और जब यहां धार्मिक विश्वास की बात हो वहां,

शब्द का मूल अर्थ में है। और इसका उल्लेख हमें उस डिस्कस पर लाता है विज्ञान और धर्म के बीच संबंध का sed प्रश्न। उस प्रश्न से निपटने के लिए यह मेरी जगह नहीं है और न ही मेरी योग्यता के भीतर है। धर्म उस क्षेत्र से संबंधित है जो कार्य-कारण के नियम से पहले हिंसात्मक है और इसलिए विज्ञान के लिए बंद है। वैज्ञानिक को धर्म के मूल्य को इस रूप में पहचानना चाहिए, चाहे उसके रूप कुछ भी हों, जब तक कि वह अपने स्वयं के हठधर्मिता का विरोध करने की गलती नहीं करता है, जिस मौलिक कानून पर वैज्ञानिक अनुसंधान आधारित है, अर्थात् अनुक्रम सभी बाहरी घटनाओं में कारण और प्रभाव का। धर्म और विज्ञान के बीच संबंधों के प्रश्न के संबंध में, यह भी कहा जा सकता है कि धर्म के वे रूप जो जीवन के प्रति शून्यवादी दृष्टिकोण रखते हैं, वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण के सामंजस्य से बाहर हैं और इसके सिद्धांतों के विपरीत हैं। अपने लिए और अपने लिए जीवन के मूल्य से सभी इनकार मानव विचार की दुनिया का इनकार है, और इसलिए अंतिम विश्लेषण में न केवल विज्ञान की बल्कि धर्म की भी सच्ची नींव का खंडन है। मुझे लगता है कि अधिकांश वैज्ञानिक इस बात से सहमत होंगे और धार्मिक शून्यवाद के खिलाफ स्वयं विज्ञान के विनाशकारी के रूप में हाथ उठाएंगे। धर्म और विज्ञान के बीच कभी कोई वास्तविक विरोध नहीं हो सकता; क्योंकि एक दूसरे का पूरक है। मेरे विचार से प्रत्येक गंभीर और चिंतनशील व्यक्ति यह अनुभव करता है कि उसके स्वभाव में धार्मिक तत्व को पहचाना और विकसित किया जाना चाहिए यदि मानव आत्मा की सभी शक्तियों को एक साथ पूर्ण संतुलन और सद्भाव में कार्य करना है। और वास्तव में, यह कोई संयोग नहीं था कि सभी युगों के महान विचारक भी गहरे धार्मिक आत्मा थे, भले ही उन्होंने अपनी धार्मिक भावना का कोई सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं किया। इच्छा के साथ समझ के सहयोग से ही दर्शन का सर्वोत्तम फल उत्पन्न हुआ है, अर्थात् नैतिक फल। विज्ञान जीवन के नैतिक मूल्यों को बढ़ाता है, क्योंकि यह सत्य और श्रद्धा-सत्य के प्रेम को आगे बढ़ाता है, जो हमारे आस-पास के मन और पदार्थ की दुनिया के अधिक सटीक ज्ञान और श्रद्धा तक पहुंचने के निरंतर प्रयास में खुद को प्रदर्शित करता है, क्योंकि हर प्रगति ज्ञान में हमें अपने स्वयं के होने के रहस्य के साथ आमने-सामने लाता है"।

पश्चिम के कई महान गणितज्ञों और वैज्ञानिकों की तरह रामानुजन की भी नामकाल की देवी माँ में बहुत आस्था थी। भारत मुख्य रूप से अद्वैतवाद की भूमि है और पुराने समय से पारलौकिक और दृश्य पर सहमति एक के गुण हैं। चक्रीय समामेलन और विनाश एक निश्चित प्रक्रिया में काम करने वाली एक सतत प्रक्रिया है। ब्रह्मांड के मौलिक चेतन कणों की उपस्थिति के साथ समय के फैलाव के साथ अभिव्यक्ति ब्रह्मांड का एक मौलिक तथ्य है। भारत ने कभी भी किसी अन्य को अपने विचार बंद करने के लिए प्रतिबंधित नहीं किया। लेकिन सामान्य धारणा हमेशा साथ रहती है, जैसे सर्वोच्च परमात्मा ।

भारत में प्राचीन दिनों में, खगोल भौतिकी सात गायत्री चंद या तरंगों में से एक थी, जो सूर्य से आती हैं, उनमें से एक विशेष रे का प्राचीन या संस्कृत नाम 'सती' है। शक्ति बिंदु जिसे 52 की संख्या में भारत का प्राचीन शक्तिपीठ माना जा रहा है। अब भारत में केवल 42 की संख्या में ही शक्तिशाली गामा किरणों के एकाग्रता बिंदु के रूप में अधिसूचित किया गया था। 64 योगिनी उच्च चेतन प्रकृति के विभिन्न तरंग दैर्ध्य के अंतर-तारकीय परमाणु सर्वनाश शक्तिशाली विद्युत चुम्बकीय तरंगों का रूपांतरण रूप है।

भारत की प्राचीन संहिता के अनुसार, ज्योतिर्लिंगम नाम दो शब्दों से बना है: "ज्योतिर" का अर्थ है प्रकाश या प्रकाश, और "लिंगम" का अर्थ है मार्क - प्रकाश का चिन। इतना ऊर्जावान प्राचीन स्वर्गीय और शक्ति पीठ निर्धारण क्षेत्र पृथ्वी की जलवायु के लिए आवश्यक होने के साथ-साथ इस तरह के नुकसान का कारण बनता है। "मेरी राय में, क्वांटम सिद्धांत मुख्य रूप से मन से संबंधित है," प्रमुख भौतिक विज्ञानी जैक सरफट्टी ने कहा, "विचार पदार्थ पैदा करता है।" शिव और शक्ति के बीच अभिन्न एकता है; एक में दो या दो में एक होते हैं; उनके बीच द्वैत में एकता है। शिव प्रकाश है, और शक्ति प्रकाश से भरी है। शक्ति, जो संभावित ऊर्जा के रूप में एक गतिशील चेतना से ज्यादा कुछ नहीं है, गुरुत्वाकर्षण रूप से प्रकाश या रोशनी को केंद्रित द्रव्यमान के रूप में फंसाया जाता है, जबकि शिव गतिज हैं। शिव शक्ति शिव और शक्ति का मिलन है, जो वास्तविकता के पारलौकिक और आसन्न घटक हैं। रौशनी पहली है, और प्राइमर्डियल दूसरी है। विनाश और समामेलन के दौरान, उनकी अदला-बदली की गई। कॉमिक धुन पर यह शिव नृत्य है। इसी प्रकार भारत के प्रख्यात आदिम शक्तिपीठों ने भी यही भूमिका निभाई। बहुत से स्थानों पर ज्योतिर्लिंगम मौजूद हैं।

ब्रह्मांड का अनंत अस्तित्व है और अनंत कुदाल के अंदर, बेशुमार परिमित स्थान का निर्माण होता है और लहरों का विनाश होता है वायुमंडलीय तरंगें और स्थलीय विद्युत चुम्बकीय तरंगें विभिन्न नोवा, सुपरनोवा ब्लैक होल ग्रह जैसे पृथ्वी और मंगल उपग्रह चंद्रमा की तरह बनाती हैं, और चक्रीय विनाश और समामेलन की कला प्रकृति की जारी है। हम देखेंगे कि प्रकृति के अदृश्य कणों के साथ अनंत और सीमित समय आयाम सुरंग के साथ 10-आयामी प्रणाली द्वारा गठित सीमित ब्रह्मांडीय अंतरिक्ष के तहत ब्रह्मांड की अंतहीन संख्याओं को देखना संभव है या नहीं। एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के जनक निकोला टेस्ला का कथन। "यदि आप ब्रह्मांड के रहस्यों की खोज करना चाहते हैं, तो ऊर्जा आवृत्ति और कंपन के अंतरों के बारे में सोचें।" निकोला टेस्ला पूर्वी रहस्यवाद से प्रेरित थे, और 26 साल की कम उम्र में, उन्होंने महान वेदांतवादी स्वामी विवेकानंद के साथ सगाई की, जिन्होंने उन पर गहरा प्रभाव डाला। पूर्वी संस्कृति की देवी, उरगा के पीछे विद्युत प्रकाश की लपटों से उनका मन प्रबुद्ध या जगमगा उठा। इसलिए उन्होंने भविष्यवाणी की कि जिस दिन विज्ञान गैर-भौतिक घटनाओं की जांच करना शुरू कर देगा, वह एक दशक में पिछली सभी सहस्राब्दियों की तुलना में अधिक प्रगति करेगा। उनके अनुभव भी मन को झकझोर देने वाले हैं, और वे कहते हैं, " मस्तिष्क केवल एक रिसीवर है।" ब्रह्मांड में एक मूल रूप है जिससे हम जानकारी, शक्ति या प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। मुझे नहीं पता कि इस मूल के रहस्य क्या हैं, लेकिन मुझे पता है कि यह मौजूद है। "एक आदमी भगवान को क्या कहता है, दूसरा भौतिकी का नियम कहता है," टेस्ला कहीं और लिखते हैं। टेस्ला कहते हैं, एक सुंदर टिप्पणी ने मुझे वास्तव में प्रबुद्ध कर दिया है, और मैं इसे भारत और उससे आगे के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के साथ साझा करना चाहता हूं। "वैज्ञानिक आदमी जल्दी ठीक होने की तलाश में नहीं है। वह अपने उन्नत विचारों को व्यापक रूप से अपनाने की उम्मीद नहीं करता है। उसका प्रयास एक बोने वाले के समान है - यह भविष्य के लिए है। उसे उन लोगों के लिए आधार तैयार करना चाहिए जो अनुसरण करें, साथ ही मार्ग भी इंगित करें।"

प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर आर्थर एडिंगटन ने एक प्राचीन भारतीय मान्यता को प्रतिध्वनित करते हुए कहा, "ब्रह्मांड की सामग्री मन की सामग्री है।" इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के देवता और दुनिया के सबसे लोकप्रिय क्वांटम भौतिक विज्ञानी टेस्ला की राय पर भरोसा किया जा सकता है। ज्ञान की वृद्धि और मानव स्थिति में सुधार की तुलना में इक्कीसवीं सदी में विज्ञान ने एक वैश्विक गांव बनाया है। डेविड और उनके सहयोगी क्वांटम भौतिक विज्ञानी हैं। बोहम का तर्क है, 'शारीरिक प्रक्रियाएं सूचना से निर्धारित होती हैं। यह अधिक से अधिक सूक्ष्म स्तरों से बना है जो परस्पर क्रिया करते हैं, और यह सीमित नहीं है। अपने एकल लेख में, मन और पदार्थ के बीच बातचीत का एक नया सिद्धांत, 1990 में प्रकाशित हुआ, उन्होंने अपने दृढ़ विश्वास को व्यक्त किया कि मानसिक प्रक्रियाओं और पदार्थ के बीच एक घनिष्ठ संबंध है, यह कहते

हुए, "सक्रिय जानकारी की पूरी धारणा एक अल्पविकसित दिमाग का सुझाव देती है। पदार्थ की तरह गतिविधि।" उनका मानना है कि मानसिक प्रक्रियाओं को एक दूसरे के साथ बातचीत करने वाली बढ़ती सूक्ष्मता के साथ गतिविधि की डिग्री के रूप में माना जा सकता है। शारीरिक प्रतिक्रियाएं, वह याद करते हैं, रोजमर्रा के विज्ञान में प्रसिद्ध हैं। डेविड बोहम का दृष्टिकोण जैन दर्शन और विज्ञान के कर्म से गहराई से जुड़ा हुआ है। "लेसाया" का विज्ञान और इसके अंतर्संबंध और रंग इलेक्ट्रो वेव एक्सचेंज, साथ ही मानव व्यवहार और ग्रह प्रणाली में इसके उत्परिवर्तन और ट्रान्स उत्परिवर्तन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसका स्ट्रिंग सिद्धांत या सुपरस्ट्रिंग सिद्धांत जैसे वैज्ञानिक रहस्यों पर गहरा झुकाव है। क्वालिया स्पेस थ्योरी, जो एक अत्यधिक आदर्श अवधारणा है, पूर्व के जैन दर्शन और विज्ञान से जुड़ी हुई है, जिसमें कहा गया है, "-क्वालिया अंतरिक्ष अवधारणा जो सभी संभावित दिमागों के अवधारणात्मक अनुभव को एकीकृत करती है। यह तर्क देता है कि क्यू एक अनंत-आयामी वियोज्य वास्तविक टोपोलॉजी वेक्टर अंतरिक्ष में एक बंद नुकीला शंकु है। नोबेल पुरस्कार विजेता फ्रीमैन डायसन सहमत हुए, और उन्होंने ब्रह्मांड की पूरी गतिविधि को केवल एक विचार प्रक्रिया से गुजरते हुए देखा, यह दावा करते हुए कि "इलेक्ट्रॉन-फोटॉन की प्रकृति बौद्धिक है।" यही कारण है कि हजारों साल पहले, जैन भिक्षुओं ने लेसिया के वैज्ञानिक तंत्र और रंग इलेक्ट्रो-एक्सचेंज को देखा, जो मानव गतिविधियों की प्रकृति को दर्शाता है। वैज्ञानिक समुदाय में, "एस्ट्रो इंजीनियरिंग" और "एस्ट्रोइंजीनियर" शब्द व्यापक रूप से उपयोग किए जा रहे हैं। दूसरी ओर, वास्तविकता की प्रकृति के ब्रह्मांडीय कोड को खोजना एक कठिन उपक्रम है, और इसमें विभिन्न परिस्थितियों और विभिन्न अवधियों में अभिव्यक्ति की एक अनूठी शक्ति है। दूसरी ओर, मानव मन का संबंध उसके मस्तिष्क के प्रवाल में कहीं न कहीं अनंत से है। विज्ञान इस विचार पर आधारित है कि विचारों और घटनाओं को ज्ञात या अज्ञात के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। अल्बर्ट आइंस्टीन ने अपने पूरे जीवन में देखा और स्वीकार किया, "सबसे सुंदर और सबसे गहन भावना जो हम अनुभव कर सकते हैं, वह रहस्यमय की अनुभूति में है।" यह सभी वास्तविक विज्ञानों का एक जलप्रलय है कि बोधगम्य ब्रह्मांड में प्रकट एक बेहतर तर्क क्षमता के अस्तित्व की बहुत ही भावनात्मक भावना ईश्वर के बारे में विचार बनाती है।"

महाभारत, दुनिया का सबसे पुराना महाकाव्य, प्रकाश तरंगों पर महत्वपूर्ण शास्त्रीय जानकारी का एक टुकड़ा है जो प्रकाश तरंगों के दस प्रकार के गुणों की व्याख्या करता है: अगनादरघर्स्ट जॉयतिस्तपा, पाक, परकासनम, सौचम, राग, लघु, तैचन्या और उर्धवगमन (जिसका अर्थ है ज्वलनशील के तहत) घर्षण की स्थिति, गर्मी, शुद्ध और परिष्कृत, ध्वनि, छोटी तरंग दैर्ध्य, तीव्रता और ऊपर की ओर प्रवाह)। वर्तमान में, पदार्थ और ऊर्जा को किनेमेटिक्स और प्राथमिक कणों की बातचीत के संदर्भ में सबसे अच्छी तरह से समझा जाता है। आज तक, भौतिकी ने पदार्थ और ऊर्जा के सभी ज्ञात रूपों के व्यवहार और अंतःक्रियाओं को नियंत्रित करने वाले कानून को मौलिक कानूनों और सिद्धांतों के एक छोटे से सेट में कम कर दिया है। भौतिकी का एक प्रमुख लक्ष्य "सामान्य आधार" को खोजना है जो इन सभी सिद्धांतों को हर चीज के एक एकीकृत सिद्धांत में एकजुट करेगा, जिसमें अन्य सभी ज्ञात कानून विशेष मामले होंगे, और रूप जो सभी पदार्थों और ऊर्जा का व्यवहार कर सकता है कम से कम सिद्धांत रूप में व्युत्पन्न किया जा सकता है जैसा कि कई वैज्ञानिकों ने दावा किया है। यहां पदार्थ के अंतिम निर्माण खंड के इस पीछा को उद्धृत करना आवश्यक होगा। गणितज्ञ, कण भौतिक विज्ञानी और "द गॉड एंड न्यू फिजिक्स" जैसी कई वैज्ञानिक पुस्तकों के लेखक, "द कॉस्मिक ब्लूप्रिंट," "द माइंड ऑफ गॉड" वगैरह पॉल डेविस ने कहा, "क्या क्वार्क और ग्लून्स का ऐसा प्रसार इस दावे को बकवास नहीं बनाता है कि वे प्राथमिक कण हैं?" इस तरह से आधुनिक तथाकथित भौतिकी तक पहुंच गई है। डेमोक्रिटस का परमाणु सिद्धांत तीन किस्मों के 200 घुलित उप-परमाणु कणों को 'अप', 'डाउन', 'स्ट्रेंज', 'चार्म्ड', 'बॉटम' और 'टॉप' क्वार्क और आगे इन क्वार्कों को एक साथ रखने के लिए आज भौतिक विज्ञानी अनुमान लगा रहे हैं। हे n 'ग्लूऑन' नामक एक अन्य उप-परमाणु कण का अस्तित्व। यह विश्व वैज्ञानिकों के अंतिम निर्माण खंड के लिए भटकना है। गुरुत्वाकर्षण बल अभी भी इस "भव्य एकीकरण" से बचा हुआ है। चूंकि भौतिक विज्ञानी एक 'सुपर यूनिफाइड क्वांटम थ्योरी' का सपना देख रहे हैं, जो न केवल गुरुत्वाकर्षण को एक आदिम बल में एकीकृत करेगा, बल्कि एक सुपर-डेंस सुपरनोवा के एक बड़े धमाके द्वारा ब्रह्मांड के निर्माण के पहले कुछ क्षणों की एक तस्वीर भी पेश करेगा।

कैम्ब्रिज के प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग सोचते हैं कि "ब्रह्मांड की शक्तियों का यह सुपर-एकीकरण वर्तमान में सैद्धांतिक भौतिकी में सबसे उत्कृष्ट समस्या है"। विज्ञान के एकीकरण का अधूरा सपना और ब्रह्मांड के बारे में अत्यंत संग्रहीत ज्ञान अधिक से अधिक जटिल प्रश्नों की संख्या बढ़ा रहा है, जबकि आम आदमी की समझ का मानदंड ठीक उसी तरह का वर्णन करने में कम सक्षम होता जा रहा है जो वैज्ञानिक प्रयोगों में देख रहे हैं या खोज रहे हैं। उप-परमाणु दुनिया, जैसा कि आइंस्टीन ने कहा था, एक 'अनओपनेबल वॉच' है, जहां हम डायल पर पॉइंटर्स को हिलते हुए देख सकते हैं, लेकिन नीचे के सटीक तंत्र को कभी नहीं जान सकते।' रॉकफेलर विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञानी हेंज पैगल्स ने 1982 में प्रकाशित 'द कॉस्मिक कोड' नामक अपनी पुस्तक में लिखा है- "इस घटना की प्रकृति से यह अध्ययन करता है, विज्ञान अदृश्य हो गया है। अनदेखी दृश्य को प्रभावित कर रही है"। विज्ञान के प्रख्यात अग्रणी मैक्स

बॉर्न ने अनुमान लगाया है कि फोटॉन और इलेक्ट्रॉन 'सचेत या जैविक' हो सकते हैं। क्वांटम भौतिकी की कोपेनहेगन व्याख्या और एवरेट-व्हीलर व्याख्या ने इस विचार की ओर इशारा किया कि बाहरी ब्रह्मांड हमारे दिमाग की रचना है। क्वांटम भौतिकी के लिए, ब्रह्मांड धीरे-धीरे एक सर्वव्यापी ब्रह्मांड के रूप में प्रकट हो रहा है। 'अमौरी डी रीन कोर्ट ने 'द आई ऑफ शिवा' शीर्षक से अपनी बेस्टसेलर किताब में लिखा है-... इसका उत्तर इस तथ्य में निहित है कि भारतीय रहस्यवाद, कम से कम जहां तक इसके प्रमुख प्रतिनिधियों का संबंध है, पिछले सौ वर्षों में उतना ही विकसित हुआ है जितना कि स्वयं भौतिकी का विज्ञान, एक ऐसी दिशा में जो दोनों के अपरिहार्य अभिसरण की ओर इशारा करता है।

प्रो. मुनि महेंद्रन ने अपनी विज्ञान रचना में ब्रह्मांड के अस्तित्व और प्राचीनता के बारे में अपने निष्कर्ष में लिखा है कि 'विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा अब तक प्रस्तुत किए गए अधिकांश सिद्धांत बताते हैं कि ब्रह्मांड का समय के संबंध में अनंत अस्तित्व है। सिद्धांत, जो यह दावा करते हैं कि ब्रह्मांड एक निश्चित निश्चित समय पर अस्तित्व में आया और अंततः समाप्त हो जाएगा, को आधुनिक ब्रह्मांड विज्ञानियों से बहुत कम समर्थन मिला है।

प्रख्यात वैज्ञानिक प्रो. एम.जी.के मेनन ने अपने एक पेपर में लिखा है "विज्ञान की उत्पत्ति मानव मस्तिष्क के विकास में निहित है, और प्रकृति और आसपास की दुनिया का पता लगाने, जानने और समझने के लिए मनुष्य में जिज्ञासा की आंतरिक भावना है। प्रो। मेनन, भारत के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अत्यधिक प्रसिद्ध वैज्ञानिक, सर फ्रांसिस बेकन के कथन के महत्व को उद्धृत करते हैं, - 'मानव ज्ञान और मानव शक्ति सह-विस्तृत हैं, कारणों की अज्ञानता हमें प्रभाव पैदा करने से रोकती है, प्रकृति

को केवल कारणों का पालन करके ही शासित किया जा सकता है। जो सिद्धांत खोजता है वह नियम देता है जो अभ्यास लागू होता है"। प्रो मेनन लिखते हैं, "बेकन के शब्द वैज्ञानिक गतिविधि के उद्देश्य को सामने लाते हैं, यह प्रकृति के नियमों की खोज करना है ताकि मानव जाति के दृष्टिकोण और दुनिया की समझ को व्यापक बनाया जा सके ताकि हम अपने भौतिक अस्तित्व के आधार को बढ़ा सकें और मदद कर सकें। हम उन भौतिक और जैविक आपदाओं से लड़ते हैं जो हमें जीवन के माध्यम से हमारी प्रगति में घेरती हैं।"

सर आर्थर स्टेनली एडिंगटन का विचार ए.डी. रीन कोर्ट ने अपनी बेस्टसेलर पुस्तक द आई ऑफ शिवा में उद्धृत किया है, जिसमें साधारण पदार्थ और चेतना के बीच अंतर के बारे में बताया गया है। साधारण पदार्थ और चेतन पदार्थ के बीच का अंतर यह है कि सामान्य मामलों में कमतर में कोई संबंध नहीं है। कणों के व्यवहार के भाग, जबकि चेतन पदार्थ में सहसंबंध हो सकता है।"

वैज्ञानिक नील्स बोहर पूछते हैं, "उसी धुन में चेतना को कानून के भौतिक और रासायनिक गुणों द्वारा कैसे समझाया जा सकता है, मानव स्थिति से निपटने के दौरान चेतना शब्द, जो हमारे साथ-साथ दूसरों पर भी लागू होता है, अनिवार्य है। इन सभी के कारण दावा कैसे किया जाता है भौतिकवाद, कि 'रहस्यमय और रासायनिक कानूनों के एक परिष्कृत संयोजन द्वारा जीवन को समझाया जा सकता है, वैज्ञानिकों द्वारा इतने लंबे समय तक स्वीकार किया जा सकता है।" यहां विज्ञान की अखंडता पर दुनिया के सबसे प्रसिद्ध वैज्ञानिकों में से एक पर ध्यान देना आवश्यक होगा, जो 1973 में क्वांटम टनलिंग और सुपरकंडक्टिविटी के क्षेत्र में अपने काम के लिए नोबेल पुरस्कार के मालिक थे, ब्रायन जोसेफसन, वे भारतीय के एक मास्टर प्रैक्टिशनर थे। योग, ने 1982 के एक साक्षात्कार में कहा, "इससे यह संभावना बढ़ जाती है कि ब्रह्मांड के एक हिस्से को दूसरे हिस्से का ज्ञान हो सकता है-कुछ शर्तों के तहत कुछ दूरी पर किसी तरह का संपर्क"। हेनरी स्टैप मन और पदार्थ के संबंध में वैज्ञानिक खोज पर लिखते हैं, "एक प्राथमिक कण एक स्वतंत्र रूप से मौजूद विश्लेषण योग्य इकाई नहीं है। यह संक्षेप में, रिश्तों का एक समूह है जो अन्य चीजों के लिए शोध करता है"। जिस ब्रह्मांड को हम अब मन और पदार्थ के एकीकरण की चिंता में देखते हैं, उसकी कल्पना सहस्राब्दी पहले भारतीय संतों द्वारा की गई थी

और ब्रह्मांड के परस्पर संबंध की स्थापना की। इस चिंता में भौतिक विज्ञानी फ्रिटजॉफ कैप्रा लिखते हैं, "मेरा मानना है कि मौलिक एकता और ब्रह्मांड की संबद्धता और घटना की आंतरिक गतिशील प्रकृति-आधुनिक भौतिकी के दो मूलभूत तत्व-भविष्य के शोध से अमान्य नहीं होंगे।"

नोबेल वैज्ञानिक फ्रांसिस क्रिक तंत्रिका कोशिका या न्यूरॉन के बहुआयामी कार्य की बात करते हैं। वह लिखते हैं: "न्यूरॉन की एक विशेषता पहले से ही काफी स्पष्ट है। एक न्यूरॉन अलग-अलग दरों पर और कुछ हद तक, विभिन्न शैलियों में आग लगा सकता है"। यह सत्य प्रतीत होता है, अन्यथा संभव है कि कुछ अचेतन अवस्था, अवचेतन अवस्था, अतिचेतन अवस्था, स्वप्न, निद्रा, ध्यान, चलना, क्रीड़ा के दौरान बाहर का व्यवहार करें। ब्रह्मांड का मॉडल यूक्लिडियन मॉडल ब्रह्मांड घुमावदार प्रकृति पर ब्रह्मांड के विस्तार के सिद्धांत पर निर्भर करता है जबकि घुमावदार बेलनाकार समय है। रोजर पेनरोज़ ने कहा, ब्रह्मांड के एकीकरण के लिए दृष्टिकोण बनाए रखना होगा ग्रैंड यूनिफाइड फील्ड थ्योरी ऑफ द यूनिवर्स से पहले तंत्र को एकीकृत करना आवश्यक है, सुर्खियों में रहने वाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने भ्रम की स्थिति को या तो व्यक्तिवादी हित की आवश्यकताओं के नाम पर बनाया है"।

हिंदी व्युत्पत्ति लोककास 'अलोककासया' जो भारतीय मूल के संज्ञा शब्द हैं जो अर्थ का प्रतिनिधित्व करते हैं गणित की मदद करते हैं, डॉ। ने ब्रह्मांड बेलनाकार समय अनंत के रहस्य की कोशिश की, जबकि सामान्य सिद्धांत सापेक्षता ने घुमावदार स्थान को जोड़ा, आयामी सातत्य के साथ परीक्षण किया। वहाँ आइंस्टीन द्वारा की गई गलती से उन्होंने पूरे ब्रह्मांड की गणना के लिए गणितीय डिजाइन तैयार किया! लेकिन यह समझने के लिए आवश्यक है कि हम ब्रह्मांड के पूरे द्रव्यमान की गणना कैसे कर सकते हैं जब तक कि हम कॉस्मिक स्पेस या सुपर कॉस्मिक स्पेस या ट्रांस कॉस्मिक स्पेस या अदृश्य या कई ब्रह्मांडों की मानवीय धारणा से परे को परिभाषित नहीं कर सकते? तो अब प्राथमिक कणों के मैट्रिक्स को परिभाषित करना आवश्यक होगा और यह नौ, दस या ग्यारह-आयामी या बहुआयामी ब्रह्मांड के बाद कैसे आ सकता है? यदि हम इसे यूक्लिडियन गणितीय रूप से निरूपित के तहत लें तो अनंत का परिणाम केवल अनंत होगा। फिर हम कहाँ निष्कर्ष निकालते हैं? वैज्ञानिकों के पास इसका अस्पष्ट विचार है। जैन और अन्य भारतीय ब्रह्मांड विज्ञान शुरू से ही कई ब्रह्मांड के विचार के साथ पैदा हुए थे और भारतीय विज्ञान और दर्शन ने कभी यह दावा नहीं किया कि पृथ्वी 4000 ईसा पूर्व से पहले अस्तित्व में आई थी।

कुंडकुंडाचार्य ने कई सौ साल पहले लिखा है, "ब्रह्मांड एक सीमित इकाई है और इससे परे, एक अनंत सुप्रा ब्रह्मांड है। इसलिए, भौतिक और गैर-भौतिक दुनिया के संगठित अस्तित्व को संरक्षित करने के लिए, कुछ पदार्थ होना चाहिए अंतरिक्ष के अलावा, क्योंकि, यदि अंतरिक्ष गति और विश्राम का माध्यम होता, तो कोई सुपर-सार्वभौमिक स्थान (alokakasa) नहीं होता और ब्रह्मांड, 'ब्रह्मांड' के रूप में और 'अराजकता' के रूप में भी मौजूद नहीं होता। ।"

18 जून 2004 को अनावरण किया गया, दो मीटर ऊंची प्रतिमा भारत सरकार की ओर से एक उपहार थी। मूर्ति के बगल में एक पट्टिका, फ्रिटजॉफ कैप्रा के एक उद्धरण के साथ, इसके महत्व को समझाती है: "सैकड़ों साल पहले, भारतीय कलाकारों ने कांस्य की एक सुंदर श्रृंखला में नृत्य करने वाले शिव की दृश्य छवियां बनाईं। हमारे समय में, भौतिकविदों ने सबसे उन्नत तकनीक का उपयोग किया है। ब्रह्मांडीय नृत्य के पैटर्न को चित्रित करने के लिए। ब्रह्मांडीय नृत्य का रूपक इस प्रकार प्राचीन पौराणिक कथाओं, धार्मिक कला और आधुनिक भौतिकी को जोड़ता है।" भौतिक विज्ञानी फ्रिटजॉफ कैपरा ने भौतिकी के ताओ में आगे बताया: "शिव का नृत्य सभी अस्तित्व के आधार का प्रतीक है। साथ ही, शिव हमें याद दिलाते हैं कि दुनिया में कई गुना रूप मौलिक नहीं हैं, बल्कि भ्रमपूर्ण और हमेशा बदलते रहते हैं। आधुनिक भौतिकी ने दिखाया है कि सृजन और विनाश की लय न केवल ऋतुओं के परिवर्तन और सभी जीवित प्राणियों के जन्म और मृत्यु में प्रकट होती है, बल्कि अकार्बनिक पदार्थ का सार भी है।" क्वांटम फील्ड थ्योरी के अनुसार, "सृजन और विनाश का नृत्य पदार्थ के अस्तित्व का आधार है। आधुनिक भौतिकी ने इस प्रकार प्रकट किया है कि प्रत्येक उप-परमाणु कण न केवल एक ऊर्जा नृत्य करता है बल्कि एक ऊर्जा नृत्य भी है; निर्माण और विनाश की एक स्पंदनशील प्रक्रिया। आधुनिक भौतिकविदों के लिए, शिव का नृत्य उप-परमाणु पदार्थ का नृत्य है, जो सभी अस्तित्व और सभी प्राकृतिक घटनाओं का आधार है।"

धर्म ईश्वर के प्रति मनुष्य के बंधन का प्रतिनिधित्व करता है। यह एक अलौकिक शक्ति [मचट] के सामने श्रद्धापूर्ण विस्मय में समाहित है, जिसके लिए मानव जीवन अधीनस्थ है और जिसकी शक्ति में हमारा कल्याण और दुख है। इस शक्ति के साथ स्थायी संपर्क में रहना और इसे हर समय अपने आप में रखना, विश्वास करने वाले व्यक्ति का अंतहीन प्रयास और सर्वोच्च लक्ष्य है। क्योंकि केवल इस तरह से ही कोई अपेक्षित और अप्रत्याशित खतरों से पहले खुद को सुरक्षित महसूस कर सकता है, जो

उसके जीवन में खतरा पैदा करता है, और उच्चतम खुशी में भाग ले सकता है - आंतरिक मानसिक शांति - जो केवल भगवान के साथ मजबूत बंधन के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है और उनके सलाहकार के लिए बिना शर्त विश्वास: प्रभु नारायण, पर्यावरण वैज्ञानिक, अध्यक्ष (विज्ञान और भारतीय दर्शन केंद्र) सर्वशक्तिमान और मदद करने की इच्छा। (मैक्स प्लैंक 1958, 9)।

संदर्भ सूचि

• शक्ति पीठ गीता प्रेस का प्रकाशन

• गंगा नदी, मेरी अनन्त माता प्रभु नारायण द्वारा •

• हेबनेर, गणेश और ओसबोर्न, डेविड। कुंभ मेला: द वर्ल्ड्स लार्जेस्ट एक्ट ऑफ फेथ। कैलिफ़ोर्निया: कैलिफ़ोर्निया: Entourage प्रकाशन, 1990 •

• हीडरर, टोनी। "पवित्र स्थान: भारत का कुंभ मेला," राष्ट्रीय भूगोल पत्रिका, मई 1990 •

•। जेम्स, ई.ओ. देवी माँ का पंथ: एक पुरातत्व और वृत्तचित्र अध्ययन, लंदन; टेम्स और हडसन •

•। जौहरी, हरीश. गंगा का जन्म। वरमोंट: आंतरिक परंपराएं 1998 • •

• कबीर, हुमायूँ। पुरुष और नदियाँ, बॉम्बे, कुलकर्णी प्रकाशक। झिंगरन। भारत की मछली और मत्स्य पालन। दिल्ली, भारत: हिंदुस्तान प्रकाशन निगम • •

• बिल, ऐटकेन। सात पवित्र नदियाँ, पेंगुइन, नई दिल्ली। • राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, हिमालय-1972 का भूगोल। •

• बोस, सुबोध चंद्र। हिमालय की भूमि और लोग, कलकत्ता। भारतीय प्रकाशन,

• एटकिंसन ई.टी. हिमालयन गजट खंड-2, भाग-1 और 2,1882, कॉस्मो प्रकाशन, दिल्ली।

• ऑल्टर, एंड्रयू, "डांसिंग द गॉड्स: पावर एंड मीनिंग इन द म्यूजिक ऑफ गढ़वाल, उत्तर भारत।" संगीत के डिस स्कूल, मोनासो

• विश्वविद्यालय ऑस्ट्रेलिया-2000।